International Journal of Academic Research and Development
ISSN: 2455-4197, Impact Factor: RJIF 5.22
www.academicsjournal.com
Volume 2; Issue 1; January 2017; Page No. 128-129

हरियाणावी लोकगीतों में वर्णित नारी मनोभाव

प्रमिला देवी

सहायक प्रवक्ता, कन्या महाविद्यालय, खरखौदा, सोनीपत, हरियाणा, भारत।

प्रस्तावना

लोक साहित्य जनता की सम्पत्ति होने के कारण लोक संस्कृति का दर्पण माना जाता है। वर्तमान शिक्षा–व्यवस्था में लोकजीवन को समझने, समझाने का प्रयास समय की मॉग है। भारतीय भाषाओं के इतिहास में लोक–साहित्य की अपनी जो सुदीर्घ परंपरा है, उसमें लोक संस्कृति के असंख्य तत्त्व विद्यमान हैं। इस प्रसंग में उल्लेखनीय है कि लोक–साहित्य की असली लोकरागिनी नारी है। नारी का लोकजीवन चाहे कैसा भी हो वह समाज को गढ़ने में अपनी महत्ती भूमिका सदियों से अदा करती आ रही है। कथा–कहानी, गीत और अपनी लोकवाणी से नारी ने समाज को आगे विकास के पथ पर बढ़ने के लिए प्रेरित किया है। हरियाणा के लोक साहित्य पर पिछले पचास वर्षो में काफी काम विद्वानों द्वारा किया, उनके संकलन व संरक्षण की दिशा में किया गया है। कई वैज्ञानिकों ने हरियाणवी भाषा के भी अलग–अलग नाम दिए हैं। श्री जगदीश प्रसाद कौशिक ने इसे हरियाणवी कहा है।[1] डॉ. जैन ने इसे हरियाणवी या बांगरू भाषा बताया है। उनके अनुसार हरियाणवी का दूसरा नाम ही बॉगरू है।[2] किशोरी दास वाजपेयी ने इसे खड़ी बोली माना है[3] तथा डॉ. शंकर लाल ने इसे हरियानी कहा है।[4]

प्राचीन युग में हरियाणा में काफी मात्रा में साहित्य की रचना हुई। परंतु दुर्भाग्यवश यह समस्त साहित्य आज उपलब्ध नहीं है। वैदिक काल में हरियाणा में ढेर सारा साहित्य रचा गया। इस काल के कुछ शब्दों के अवशेष आज भी हरियाणवी भाषा में मौजूद है। जैसे– राशि (वैदिक कालीन), रास (हरियाणवी), गोष्ट (वैदिक कालीन) गोसटा (हरियाणवी)।

इस साहित्य में सबसे प्राचीन ऋग्वेद है। ऋग्वेद केवल पद्यबद्ध रचना है। अतः यह हरियाणा साहित्य की प्राचीनतम विधा है। लोकगीतों की रचना अनन्तकाल से हो रही है। हजारों गीत बनते हैं, सामाजिक स्तर को प्राप्त करते हैं और मिट भी जाते हैं। कुछ अल्पकालिक होते हैं। कुछ दीर्घकालीन होते हुए भी बहुश्रुत और बहुप्रयुक्त नहीं होते। लोकगीतों के स्थायित्व के लिए उनके ध्वनिजन्य तथा भावजन्य गुण तो विद्यमान होने ही चाहिए परंतु उनका संस्कारगत लगाव उससे भी अधिक आवश्यक है। ''लोकगीत स्वतः स्फूर्त प्राकृतिक काव्य के अंग हैं। लोकगीतों में उनके रचयिता अथवा रचना–काल का प्रश्न महत्त्वपूर्ण नहीं होता, उनका महत्त्व तो उनकी सहज रसोद्रेक की शान्ति तथा सरल सौन्दर्य में रहता है। उनमें एक व्यक्ति की अनुभूति की अपेक्षा लोक–हृदय की अनुभूति ही अधिक रहती है, व्यक्ति–विशेष की भावनाओं का प्रतिनिधित्व न कर लोकगीत समुदाय की भावना के कहीं अधिक सच्चे प्रतीक होते हैं। काल और स्थान की सीमा को लॉघ, लोक गायकों और गायिकाओं के अधरों पर जीवित रहने वाले ये लोकगीत अतीत की परम्परा को वर्तमान में भी अंशतः जीवित बनाये रखते हैं।[5] सुप्रसिद्ध विद्वान राल्फ विलियन्स ने लोकगीतों के महत्त्व का प्रतिपादन करते हुए ठीक लिखा है, ''लोकगीत न पुराना है न नया वह तो उस जंगली पेड़ की तरह होता है जिसकी जड़ें अतीत की गहराईयों में घुसी होती हैं। परन्तु जिनमें नित नई शाखाएं नयी पत्तियां और नए फल निकलते रहते हैं।[6]

हरियाणवी लोकगीतों में नारी अपने प्रेम, ईर्ष्या, द्वेष, तड़प, सिहरन, टीस, उल्लास, कसक, राग–विराग, मादकता तथा अन्यान्य भावों को अभिव्यक्त करती है। नारी जीवन की कोई ऐसी भावना नहीं बचती, जिसे लोकगीतों ने स्वर न दिया हो। ए.एच. क्रेप के अनुसार– ''अपने स्वरों की कोमलता के कारण बहुत से गीत नारियों द्वारा निर्मित होना सूचित करते हैं।''[7] नारी मनोविज्ञान, नारी की यथार्थ भावनाओं व विचारों को जानने समझने के लिए लोकगीतों से बेहतर माध्यम और हो ही नहीं सकता। स्त्री मन को समझना, पढ़ना लोगों के लिए आकर्षण और जिज्ञासा का विषय रहा है। स्त्री स्वयं भी अपने मन को समझना चाहती है, इसी चाह ने नारी मनोविज्ञान को जन्म दिया है। सम्यक् रूप से मानव के प्रति मानव की चिंता को समझने, देखने–बूझने के प्रयत्न को मनोविज्ञान का विषय माना जाता था। परंतु फ्रायड के द्वारा अचेतन मन के उद्घाटन के बाद मनोविज्ञान को माना जाने लगा कि ''मनोविज्ञान वह विज्ञान है जिसमें मन की चेतना और अचेतन दोनों प्रकार की क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है।[8] लोक साहित्य अबाध रूप से नैसर्गिक क्रियाओं का निष्पादन करता है। शिक्षा और सभ्यता के आवरण से स्वयं को दबने से बचाकर लोक–साहित्य मानव मन की वास्तविक अभिव्यक्ति करता है। इसी लिए मनोविज्ञान के अनेक तथ्यों को लोक साहित्य में तथा लोक–साहित्य के अनेक तथ्यों को मनोविज्ञान में सही रूप में परखा जा सकता है। यही कारण है कि लोकगीतों में नारी मनोविज्ञान का प्रत्येक पक्ष उभरता है। नारी जीवन से इन गीतों का घनिष्ट संबंध है क्योंकि नारी की विभिन्न अवस्थाएँ इन लोकगीतों में अंकित मिलती हैं।

नारी जीवन का आरम्भ विवाह के बाद होता है। ससुराल में जाकर (नवोढ़ा) की सबसे नजदीकी सहेली उसकी ननद होती है। एक नववधू अपनी ननद से सावन के महीने में मेहंदी रचाने की बात कहती है और पति से मिलवाने की प्रार्थना भी करती है।

''घालो री ननदल मेहंदी के पात, रगड़ रचाओ महंदा जी राज।
नणद रचाए हाथ और पांव हमनै रचाई चिटली आंगली जी राज।
होले री भावज म्हारे साथ आज मिला द्यूं धणी तैं जी राज।

विवाह के बाद कुछ ही दिनों में नववधू को सब कुछ अपना सा लगने लगता है। सास ससुर का स्नेह, ननद व देवर की

हंसी ठिठोली और उन सबसे बढ़कर पति का प्रेम उसे पता ही नहीं चलता कब दिन बीत गए और पीहर को भूलने लगती है। पर यदि पति नौकरी पेशा है और उसे छोड़कर जाना चाहता है तो कोमल हृदय तड़फ कर कह उठता है –

''लाय चले थे भंवर जी पीपली जी,
हांजी कोय हो गई घेर घमेर, बैठण की रूत चाले चाकरी जी।''

पति जब प्रदेश चला गया तो हंसी खुशी तथा शृंगार सब छूट जाता है और सावन भी नहीं सुहाता और दुःखी मन कह उठता है–

''तीजां का त्यौहार सखी हे सब बदल रही बाणा।
मैं लिकड़ी बिचली गाल जेठाणी ने मार दिया ताना।
जिसका पति प्रदेश हो आच्छा मर जाणा।''

इस प्रकार सावन में पति के परदेश में होने के कारण वह ससुराल में विरहाग्नि में पड़पने से पीहर जाना अच्छा समझती है और अपने भाई की प्रतीक्षा में गा उठती है– ''आज मेरा बीरा आवैगा आया तीजां का त्योहार। हरियाणवी परिवेश में नारी, पुत्र जन्म से ही अपने जीवन को सफल मानती है। मातृरूप मे नारी सदैव पूज्य एवं महान है, पुत्र रत्न की प्राप्ति होने पर वह इस खबर को जल्द से जल्द अपने मायके पहुॅचाना चाहती है और गा उठती है–

''उड़ज्या ने नगरी के काग मेरी मायड़ नै जाकै कह दिए।
तेरी धीए जण्या से नन्द लाल हीरामल भेजै पीलीया।''

जब लड़का थोड़ा बड़ा हो जाता है तो उसकी शिक्षा दीक्षा का प्रबंध करने की बात सोची जाती है–

''मेरा परस चढ़ता सुसरा न्यू कहै, बहु लड़के न गुरूकुल घाल, लड़के के हिरदय ज्ञान सै।
ससुर जी आगै ने गुरूकुल दयूंगी घाल। इबकै तो लड़का नादन सै।''

इस प्रकार नारी अपने पुत्र का पालन पोषण बड़े लाड़ चाव से करती है और अपने बेटे को पढ़ा लिखा सुंदर व शूरवीर बनाने का हर संभव प्रयास करती है। परंतु उसके बड़ा होने पर यदि देश के ऊपर कोई विपत्ति आ पड़ती है तो मां अपने लाड़ चाव से पाले हुए बेटे को घर में छिपाने की बजाए देश की रक्षा के लिए उसे अपने दूध की लाज रखने की कसम देकर कह उठती है–

''कर देश की रक्षा चाल्य लाल मेरे सज धज कै।
दुश्मन ने सीमा तेरी, चारूॅ ओड़ तै आकै घेरी,
के इसका नहीं ख्याल, लाल मेरे सज धज कै।
जिस दिन के लिए तनै दूध पिलाया, वो आज लाड़ले आया।
करकै दिखा कमाल लाड़ले सज धज कै।
शहादत है आने की जाना, आया सै उसनै होगा जाणा।
धनी हो या कंगाल लाल मेरे सजधज कै।''

इस तरह नारी की अलग–अलग अवस्थाओं को व्यक्त करते हुए ये लोकगीत अत्यंत सूक्ष्म भावनाओं को उजागर करते रहे हैं। इस अमूल्य धरोहर को संजोकर रखना अत्यंत आवश्यक है अन्यथा आधुनिक तकनीकी युग में भावनाओं की कोमलता को भूलकर मानव स्वयं भी एक मशीन बन जाएगा।

संदर्भ

1. श्री जयप्रकाश कौशिक–भारतीय भाषाओं का इतिहास, पृ. 189।
2. श्री दीपचंद जैन–हिन्दी और उसकी विविध बोलियां, पृ. 87।
3. श्री किशोरी दास वाजपेयी–हिंदी शब्दानुशासन, पृ. 586
4. श्री शंकर लाल यादव – हरियाणा प्रदेश का लोक सहित्य, पृ. 22।
5. दुबे श्यामाचरण – मानव और संस्कृति, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली संस्करण 1998 पृ. 165।
6. उपाध्याय डॉ. कृष्णदेव– लोकसाहित्य की भूमिका, साहित्य भवन प्रा. लि. इलाहाबाद, सं. 2004, पृ. 27।
7. दी साईंस ऑफ फोकलोर, ए.एच.क्रेप, पृ. 153।
8. सरल मनोविज्ञान, लालजीराम शुक्ल, पृ. 3।